وَإِذۡ قَتَلۡتُمۡ نَفۡسٗا فَٱدَّٰرَٰٔتُمۡ فِيهَاۖ وَٱللَّهُ مُخۡرِجٞ مَّا كُنتُمۡ
تَكۡتُمُونَ ﴿٧٢﴾ فَقُلۡنَا ٱضۡرِبُوهُ بِبَعۡضِهَاۚ كَذَٰلِكَ يُحۡيِ ٱللَّهُ
ٱلۡمَوۡتَىٰ وَيُرِيكُمۡ ءَايَٰتِهِۦ لَعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُونَ ﴿٧٣﴾ ثُمَّ قَسَتۡ
قُلُوبُكُم مِّنۢ بَعۡدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَٱلۡحِجَارَةِ أَوۡ أَشَدُّ قَسۡوَةٗۚ وَإِنَّ
مِنَ ٱلۡحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنۡهُ ٱلۡأَنۡهَٰرُۚ وَإِنَّ مِنۡهَا لَمَا يَشَّقَّقُ
فَيَخۡرُجُ مِنۡهُ ٱلۡمَآءُۚ وَإِنَّ مِنۡهَا لَمَا يَهۡبِطُ مِنۡ خَشۡيَةِ ٱللَّهِۗ وَمَا
ٱللَّهُ بِغَٰفِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُونَ ﴿٧٤﴾ ۞ أَفَتَطۡمَعُونَ أَن يُؤۡمِنُواْ
لَكُمۡ وَقَدۡ كَانَ فَرِيقٞ مِّنۡهُمۡ يَسۡمَعُونَ كَلَٰمَ ٱللَّهِ ثُمَّ
يُحَرِّفُونَهُۥ مِنۢ بَعۡدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمۡ يَعۡلَمُونَ ﴿٧٥﴾ وَإِذَا لَقُواْ
ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قَالُوٓاْ ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعۡضُهُمۡ إِلَىٰ بَعۡضٖ قَالُوٓاْ
أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ ٱللَّهُ عَلَيۡكُمۡ لِيُحَآجُّوكُم بِهِۦ عِندَ
رَبِّكُمۡۚ أَفَلَا تَعۡقِلُونَ ﴿٧٦﴾ أَوَلَا يَعۡلَمُونَ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا
يُسِرُّونَ وَمَا يُعۡلِنُونَ ﴿٧٧﴾ وَمِنۡهُمۡ أُمِّيُّونَ لَا يَعۡلَمُونَ ٱلۡكِتَٰبَ
إِلَّآ أَمَانِيَّ وَإِنۡ هُمۡ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾ فَوَيۡلٞ لِّلَّذِينَ يَكۡتُبُونَ
ٱلۡكِتَٰبَ بِأَيۡدِيهِمۡ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنۡ عِندِ ٱللَّهِ لِيَشۡتَرُواْ
بِهِۦ ثَمَنٗا قَلِيلٗاۖ فَوَيۡلٞ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتۡ أَيۡدِيهِمۡ وَوَيۡلٞ لَّهُم
مِّمَّا يَكۡسِبُونَ ﴿٧٩﴾ وَقَالُواْ لَن تَمَسَّنَا ٱلنَّارُ إِلَّآ أَيَّامٗا
مَّعۡدُودَةٗۚ قُلۡ أَتَّخَذۡتُمۡ عِندَ ٱللَّهِ عَهۡدٗا فَلَن يُخۡلِفَ ٱللَّهُ
عَهۡدَهُۥٓۖ أَمۡ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ مَا لَا تَعۡلَمُونَ ﴿٨٠﴾ بَلَىٰۚ مَن

كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِۦ خَطِيٓـَٔتُهُۥ فَأُوْلَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ
ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٨١﴾ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ
ٱلصَّٰلِحَٰتِ أُوْلَٰٓئِكَ أَصْحَٰبُ ٱلْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿٨٢﴾

Theme	
Miracle of bringing the dead body back to life. The Israelites reaction to the miracle. People of the Book are hopeless victims of hypocrisy. Some of them attribute their own writings to Allah. Jews' false claim and its punishment.	मुर्दा जिस्म को दोबारा ज़िंदगी अता किए जाने का मौजिज़ा। इस मौजिज़े पर बनी इस्राईल का रद्दे-अमल। अहले-किताब निफ़ाक़ के ना-उम्मीद शिकार हैं। उनमें से बाज़ लोग अपनी ही तहरीरों को अल्लाह की तरफ़ मंसूब करते हैं। यहूदियों का झूठा दावा और उसकी सज़ा।
Tarjumani	
And remember the incident, when you killed a man and started disputing as to who killed him, Allah made it known what you concealed. So, We said: "Strike the dead body with a piece of the slaughtered cow." Thus Allah brought the dead to life and showed you His Signs so that you may understand His power to restore life. But, even after seeing that your hearts became	और तुम्हें याद है वह वाकिआ जब तुम ने एक शख्स की जान ली थी, फिर उसके बारे में झगड़ने और एक-दूसरे पर क़त्ल का इल्ज़ाम थोपने लगे थे और अल्लाह ने फ़ैसला कर लिया था कि जो कुछ तुम छिपाते हो, उसे खोलकर रख देगा	उस वक़्त हमने हुक्म दिया कि मक़तूल की लाश को उसके एक हिस्से से ज़र्ब लगाओ	देखो, इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दगी बख्शता है और तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखता है ताकि तुम

hard like a rock or even harder, for there are some rocks from which rivers gush out, and there are some which break asunder and water comes out of them, and there are some which fall down with the fear of Allah. Allah is not unaware of what you do. Do you, O Believers, still hope that they (people of the Book) will believe in what you say, when some of them have already heard the word of Allah and perverted it, knowingly, after they understood it? When they meet the believers (Muslims), they say: "We too are believers," but when they (people of the Book) meet each other in private, they say: "Would you disclose to the believers (Muslims) what Allah has revealed to you? So that they (Muslims) may use it as an argument against you in the court of your Rabb? Have you no sense?" Do they not really know that Allah knows what they conceal and what they reveal? Among them, there are	समझो— मगर ऐसी निशानियाँ देखने के बाद भी आख़िरकार तुम्हारे दिल सख्त हो गए, पत्थरों की तरह सख्त, बल्कि सख्ती में कुछ उनसे भी बढ़े हुए, क्योंकि पत्थरों में से तो कोई ऐसा भी होता है जिसमें से चश्मे फूट बहते हैं, कोई फटता है और उसमें से पानी निकल आता है, और कोई ख़ुदा के खौफ़ से लरज़ कर गिर भी पड़ता है अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बेख़बर नहीं है	ऐ मुसलमानो! अब क्या इन लोगों से तुम यह तवक्को रखते हो कि ये तुम्हारी दावत पर ईमान ले आएँगे? हालाँकि इनमें से एक गरोह का शेवा यह रहा है कि अल्लाह का कलाम सुना और फिर ख़ूब समझ-बूझकर दानिस्ता उसमें तहरीफ़ की	(मुहम्मदुर-रसुलुल्लाह पर) ईमान लाने वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी उन्हें मानते हैं, और जब आपस में एक-दूसरे से तखालिये की बातचीत होती है तो कहते हैं कि बेवकूफ़ हो गए हो? इन लोगों को वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुमपर खोली हैं ताकि तुम्हारे रब के पास तुम्हारे मुक़ाबले में उन्हें हुज्जत में पेश करें	---और क्या ये जानते नहीं हैं कि जो कुछ ये छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं, अल्लाह को सब

some illiterates who do not know their Holy Book; except that they follow their own desires and do nothing but conjecture. Woe to those, who write the Book with their own hands and then say: "This is from Allah," so that, they may sell it for a petty price! Woe to them, for what their hands have written and woe to them, for what they have earned. The Jews say: "The fire shall not touch us except for a few days." Ask them: "Have you obtained such a promise from Allah which Allah would not break? Or do you assert against Allah what you do not know? Yea! Those who commit evil and become encircled in sins are the inmates of Hellfire; they shall live therein for ever. As for those who believe and do good deeds, they will be the residents of Paradise and live therein forever.

बातों की ख़बर है? --- इनमें एक दूसरा गरोह उम्मियों का है, जो किताब का तो इल्म रखते नहीं, बस अपनी बेबुनियाद उम्मीदों और आरजुओं को लिए बैठे हैं और महज वहम व गुमान पर चले जा रहे हैं | पस हलाकत और तबाही है उन लोगों के लिए जो अपने हाथों से शरअ का नविश्ता लिखते हैं, फिर लोगों से कहते हैं कि यह अल्लाह के पास से आया हुआ है ताकि उसके मुआवज़े में थोड़ा-सा फ़ायदा हासिल कर लें | उनके हाथों का यह लिखा भी उनके लिए तबाही का सामान है और उनकी यह कमाई भी उनके लिए मूजिबे-हलाकत | वे कहते हैं कि दोज़ख की आग हमें हरगिज़ छूनेवाली नहीं, इल्ला यह कि चन्द रोज़ की सज़ा मिल जाए तो मिल जाए | उनसे पूछो, क्या तुमने अल्लाह से कोई अहद ले लिया है जिसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी वह नहीं कर सकता? या बात यह है कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे डालकर ऐसी बातें कह देते हो जिनके मुताल्लिक तुम्हें इल्म नहीं है कि उसने उनका ज़िम्मा लिया है? आख़िर तुम्हें दोज़ख की आग क्यों न छूएगी? जो भी बदी कमाएगा और अपनी खताकारी के चक्कर में पड़ा

	रहेगा, वह दोज़खी है और दोज़ख ही में वह हमेशा रहेगा	और जो लोग ईमान लाएँगे और नेक अमल करेंगे वही जन्नती हैं और ज़न्नत में वे हमेशा रहेंगे|
Tafsir	